द्वितीय स्वर्ण-राज की दस्तक

-डॉ० राजीव रंजन

सहायक प्रोफेसर, सार्वजनिक नीति और प्रबंधन

अलायंस स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स

अमीरी की फकीरी

हमें भुलावे में रहने की आदत है,
सच्चाई से रूबरू कहाँ हुए।
तुम जिंदगी की जदोजहद में ख़त्म हो गए,
हम अपनी कोशिशों में शुरू कहाँ हुए।।

यह अमीरी-फकीरी का फासला बुनते बुनते,
इस सफरनामे में अपने प्यादे चुनते चुनते।
कब उलझ से गए इन बेमानी बेईमानियों में,
बांटना भूल गए हम अपने ही साथियों में।।

सफर का मूल ये तो न था,
अब किससे कहूं मैं अपनी व्यथा।
सोचा एहसास के इस पलछिन में,
कह दूँ अमीरी की यह अंतिम कथा।।

इंसानियत से हमारा नाता टूटा,
जग से तो पल्ला पहले ही छूटा।
हम तो खुदाई से भी न जुट सके,
ईश्वर के कब और कहाँ हो सके।।

एक समदर्शिता ही तो थी आँखों में लानी,
छोड़नी थी यह तुक्छ बेईमानी।
संसार में कुछ हमारा-तुम्हारा न था,

फकीरी की अमीरी का मुझे एहसास न था।।

वो शाहों का शाह, शहंशाह था।
उसकी झोली में सारा संसार था।।

कोरोना काल में क्या हुआ, आइए उसपे एक नज़र डालते हैं। असंगठित क्षेत्र में, शहरों में काम करने वाले उन मजदूर भाइयों और बहनो को इस काल में सबसे अधिक त्रासदी का सामना करना पड़ा। उनकी पीड़ा और व्यथा को बयां करना तो मुश्किल है लेकिन इस आने वाली चंद पंक्तियों के माध्यम से छोटा सा प्रयास है।

झूठे-फासले

हम छोड़ चले इन् शहरों को,
उन तपती हुई दोपहरों को।
क्या मिला हमे, क्या दिया हमने?
इसका फैसला कब किया नभने।।

आये थे आशियाँ बसाने,
बदले में अपना सर्वस्व लुटाने।
लेकिन चंद व्यापारियों ने,
हमारी मेहनत के पौधे लगाए अपनी क्यारियों में ।।

बचपन में पढ़ा था हमने,
श्रम और ज्ञान है सफलता की कुंजी।
रुक्सत होते हुए अब जाना सबने,
पैसा और ज़मीन है सबसे बड़ी पूंजी।।

नव शिशु क्या मेरा तुम्हारा होता है?
वह तो सबके आँखों का तारा होता है।
उसके पालन-पोषण में कैसा भेदभाव,
यह तो नहीं होना चाहिए मनुज का स्वाभाव।।

हमने तुम्हारे ललने पाले,

तुमने हमारे बच्चों को दुत्कार दिया।
इस विषम परिस्थिति में हमें न स्वीकार किया,
अपनी आने वाली पीढ़ी को भी गलत संस्कार दिया।।

क्यारिओं में वट वृक्ष न उगते हैं,
सबको शरण ये गहते है।
निम्न सोच तुम्हारी है,
अब फैसले के बारी है।।

पाई-पाई का हिसाब होगा,
घबराओ नहीं, बटवारा न कुछ ख़ास होगा।
तुम्हारे पौधे हम न सीचेंगे,
पर रेखा भी न खीचेंगे।।

अपने खलिहानो को लौट जायेंगे,
आम की छोटी सी बगिया लगाएंगे।
तुम आओगे तो तुम्हे भी,
दो-चार आम जरूर खिलाएंगे।।

इस खेतीहर को न तुम समझ पाए,
पर हम तो जानते है।
छांव को तुमभी तरसते हो,
खेत-गृह की अभिलाषा रखते हो।।

गाँव में ये सब मिलते हैं,
शहरी बस इसकी कल्पना करते हैं।
आओ कल्पवृक्ष लगा डालें,
इन झूठी दूरियों को मिटा डाले।।

कोयल भी इठलायेंगी,
गईया दूध पिलाते फूली न समाएगी।

क्या हसीं नज़ारा होगा,

जब मिलन तुम्हारा और हमारा होगा।।

मेरी यह अभिलाषा है की जो अंतिम पंक्तियों में फासले मिटाने की दुआ की है वो जल्द कुबूल हो। आशा करता हूँ, मेरी अभिलाषा भारत की भी आकांशा बने।

भारत की अभिलाषा

न नीड की तलाश हो,

न जीवन में उपवास हो।

हर दिन अपने पास हो,

न काम का उपहास हो।।

हर दिन नूतन प्रयोग हो,

हर कुटुंब का योग हो।

न कोई रोग हो,

न कोई छोभ हो।।

बस जीवन संयोग हो,

नए परिवर्तन की होड़ हो।।।

ना हार का रंज हो,

न जीत का दम्भ हो।

स्वालम्बन में अब विलम्ब न हो।।

हमारे प्रधानमंत्री जी ने जो भारत को स्वालम्बी राष्ट्र बनाने का संकल्प किया है, मेरी दुआएं और शुभकामनाएं उनके साथ है। भारत का द्वितीय स्वर्ण-राज अपनी दस्तक दे रहा है और यह काल भारत के इतिहास में अद्वितीय होगा।।